Rohtas Mahila College, Sasaram. 31-07-20
Dr. Aman Murmu, Dept of psychology, B.A. Part I H
Pr-I, 2019-20



(Topic – परिधीय सिद्धान्त या गति सिद्धान्त)

यह सिद्धान्त विलियम जेम्स (William James, 1890) के आदत सम्बंधी विचारों पर आधारित है। उन्होंने चिंतन के केन्द्रीय संरचन से अधिक परिधीय संरचना पर बल दिया। परन्तु इस सिद्धान्त को एक व्यवस्थित रूप देने का श्रेय (Watson, 1924) वाटसन को है। उन्होंने इस सिद्धान्त की व्यवहारवादी व्याख्या प्रस्तुत की और चिंतन को संवेदी गतिवाही मामला माना। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी ज्ञानेन्द्रिय के उत्तेजित होने से एक संवेदी प्रवाह उत्पन्न होता है, जो संवेदी स्नायु द्वारा कॉर्टेक्स में जाता है, जहाँ तुरन्त एक अनुकूल चयन घटित होता है। फिर एक गति प्रवाह उत्पन्न होता है, जो किसी कर्मेन्द्रिय तक पहुँचता है। कर्मेन्द्रिय (जैसे- मांसपेशी) की क्रिया से एक स्नायु प्रवाह उत्पन्न होता है जो कॉर्टेक्स में वापस जाता है जहाँ इस क्रिया की पुनरावृति समस्या के समाधान तक होती रहती है। दूसरे शब्दों में संवेदी प्रवाहों का कॉर्टेक्स में आना और वहाँ से गति प्रवाहों का भिन्न भिन्न कर्मेन्द्रियों में जाना समस्या के समाधान तक जारी रहता है

स्पष्ट है कि केन्द्रीय सिद्धान्त केवल मस्तिष्क को चिंतन में प्रधानता देता है, जबकि गति सिद्धान्त पेशीय क्रियाओं को प्रधानता देता है। यह सिद्धान्त एक ओर स्वरयंत्र की क्रिया पर बल देता है और दूसरी ओर अन्य शारीरिक क्रियाओं पर। वाटसन (Watson) ने दावा किया कि चिंतन आन्तरिक भाषण अथवा अघोस्वर

Scanned with CamScanner

Date:....../....../......

आभाषण है।

परिधीय सिद्धान्त के गुण निम्नलिखित हैं।—

(i) इस सिद्धान्त का एक गुण यह है कि इसका प्रयोगात्मक पक्ष काफी सबल है। इसके पक्ष में इतने अधिक प्रयोगात्मक प्रमाण उपलब्ध हैं कि इसकी ~~अभि~~ अभिधारणाओं को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। इस आधार पर यह सिद्धान्त केन्द्रीय सिद्धान्त की तुलना में काफी अधिक ~~वैज्ञ~~ वैज्ञानिक तथा संतोषजनक है।

(ii) विनाके (Vinacke, 1952) के अनुसार परिधीय सिद्धांत या गति सिद्धान्त का एक गुण यह है कि इसके आलोक में चिंतन के संचालन की व्याख्या अधिक सफलता के साथ संभव है। इस आधार पर भी यह सिद्धान्त केन्द्रीय सिद्धान्त से श्रेष्ठ होने का दावा कर सकता है।

(iii) चिंतन तथा भाषा से सम्बंधित किए गए अध्ययनों से भी इस सिद्धान्त का समर्थन होता है। यह सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करने में सफल है कि भाषा विकसित होने पर चिंतन अधिक कुशल क्यों होता है

(iv) परिधीय सिद्धान्त के आधार पर मूर्त ~~चिं~~ चिंतन करना अधिक सफल तथा सरल है। इस प्रकार के ~~चिं~~ चिंतन में मांसपेशीय क्रियाएँ अधिक होती हैं। इस बात की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त पूरी तरह सफल है।

(v) बहरे गूंगे बच्चों पर किये गये प्रयोगों से परिधीय सिद्धान्त का समर्थन होता है। मैक्स (Max, 1937) ने अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान के समय बहरे गूंगे बच्चों की अंगुलियों पर लगाये गये एलेक्ट्रोड (Electrode) में क्रिया प्रवाह

Date:....../....../......

पाया गया।

(ग) यह सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करने में भी सफल है कि सरल समस्या की अपेक्षा जटिल समस्या के समाधान के समय अधिक क्रिया प्रवाह क्यों होता है। केन्द्रीय सिद्धान्त से इस बात की व्याख्या नहीं हो पाती है। अत: इस आधार पर भी परिधीय सिद्धान्त अधिक संतोषजनक है।

दोष :- (Elements) - परिधीय सिद्धान्त में कई गुण है और यह सिद्धान्त केन्द्रीय सिद्धान्त से बहुत बेहतर है, फिर भी इसे पूरी तरह सफल सिद्धान्त नहीं माना जा सकता है। कारण, इसमें निम्नलिखित दोष हैं-

i थोर्सन (Thorson) तथा मोर्गन (Morgan, 1943) ने ~~सिद्धान्त~~ इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि चिंतन के लिए अव्यक्त प्रतिक्रियाएँ आवश्यक नहीं हैं।

(ii) विनाके (Vinacke, 1952) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि यदि यह मान भी लिया जाय कि चिंतन में अव्यक्त प्रतिक्रियाएँ आवश्यक रूप से होती है, तो भी अव्यक्त प्रतिक्रिया तथा चिंतन को समान नहीं माना जा सकता है।

(iii) लैश्लेय (Lashley, 1929) ~~तथा~~ तथा मोर्गन (Morgan, 1943) के अनुसार कुछ क्रियाओं में गति संचार को काम करने का बिलकुल अपर्याप्त समय मिलता है विशेष रूप से स्वचालित क्रिया में यह बात स्पष्ट रूप से देखी जाती है। ऐसी ~~हालत~~ हालत में परिधीय सिद्धान्त की यह अभिधारणा सही नहीं जँचती है।

Scanned with CamScanner

(iv) विनाके (Vinacke, 1952) के अनुसार यह सिद्धान्त अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में उतना सफल नहीं है, जितना कि मूर्त चिंतन की व्याख्या करने में।

निष्कर्ष (Conclusion)- चिंतन के केन्द्रीय सिद्धान्त तथा परिधीय सिद्धान्त की समीक्षा करने से स्पष्ट होता है कि परिधीय सिद्धान्त का पलड़ा भारी है। इसके पक्ष में इतने अधिक प्रमाण हैं कि केन्द्रीय सिद्धान्त का पलड़ा काफी हल्का हो जाता है।

Scanned with CamScanner